काव्य गुण

हिन्दी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष, पत्र-6

काव्य में ओज, प्रवाह, चमत्कार एवं प्रभाव उत्पन्न करने वाले काव्य गुण के अंतर्गत आते हैं | वस्तुतः कवि काव्य जगत का रचनाकार होता है, वह काव्य को अत्यधिक उपादेय, रोचक एवं प्रभावशाली बनाने हेतु अग्रसर रहता है, उसकी वाणी में सृष्टि सर्जन की अभिव्यक्ति होती है | अतएव काव्यशास्त्रियों ने काव्य की समीक्षा करते समय उन गुणों का विवेचन किया है, जिनसे काव्य चातुर्य से अभिवृद्धि होती है |

आचार्य भरत, वामन आदि आचार्यों ने शब्द और अर्थ के दस गुण स्वीकार किए हैं और आचार्य भोज उनकी संख्या 24 बताते हैं | किंतु मम्मट ने दस गुण को मात्र तीन के आभ्यन्तर लाने का प्रयत्न किया है | वे तीन गुण हैं - माधुर्य ओज और प्रसाद | माधुर्य, ओज, प्रसाद इन तीन गुणों का संबंध चित्त की तीन वृत्तियों से है -

(क) माधुर्य का द्रुति, भ्रमणशीलता या द्रवशीलता से |

(ख) ओज का दीप्ति से

(ग) प्रसाद का विकास से |

प्रसाद का आशय 'प्रसन्नता' है | वस्तुत: प्रसाद गुण सभी रचनाओं का आवश्यक गुण है | अतएव जहां माधुर्य और ओज का तीन-तीन रसों से संबंध स्वीकार किया जाता है वहां प्रसाद का सभी रसों से |

प्रसाद का तादात्म्य में सभी रसों के साथ स्वीकार करना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि अर्थ की स्पष्टता को शैली में कितना महत्व प्रदान किया गया है |

प्रसाद गुण, माधुर्य और ओज दोनों के साथ रह सकता है इसलिए उसके दो उपमान अग्नि और जल दिए गए हैं | अग्नि का आशय ओज से है और जल का माधुर्य से | माधुर्य गुण संयोग श्रृंगार, करुण, विप्रलंभ और शांत रसों में वर्धित होता है और ओज गुण वीर, वीभत्स और रौद्र में क्रमशः उत्कर्ष को प्राप्त करता है |

आचार्य मम्मट ने वृत्तियों और रीतियों को एक सदृश माना है | वृत्तियों का विभाजन रचना के गुण पर आधारित है, फिर भी उसमें रचना के बाह्य रूप पर विशेष जोर दिया गया है | वृत्तियों में मानसिक पक्ष की ओर भी संकेत रहता है | नाटक में चार विधियां स्वीकार की गई है-

(1) कैशिकी

(2) सात्वती

(3) आरभटी

(4) और भारती

आचार्य भोज ने अपनी कृति 'सरस्वतीकण्ठाभरण' में रीति का साहित्य के मार्गों से संबंध स्थापित किया है और वृत्ति का संबंध विकास, विक्षेप, संकोच और विस्तार मनोदशाओं से स्वीकार किया है | रीति का संबंध बाहरी वर्ण विन्यास से अधिक है और वृत्ति का मन से |

आचार्य वामन आदि द्वारा स्वीकार शब्द और अर्थ के दस-दस गुणों का वर्गीकरण वस्तुत: विशेष वैज्ञानिक नहीं है, फिर भी उनके द्वारा शैली के गुणों और प्रकारों पर प्रकाश पड़ता है | यहां पर 'रसगंगाधर' के क्रम के अनुसार गुणों के नाम दिए जाते हैं - श्लेष, प्रसाद, समता, माधुर्य, सुकुमारता, अर्थ-व्यक्ति, उदारता और ओज |

काव्य में गुणों के स्थान का ज्ञान गुणों के लक्षणों से स्पष्ट हो जाता है | गुण काव्य-शोभा के जन्मदाता हैं और इनसे ही काव्य की शोभा भी बढ़ती है | आचार्य वामन का कथन है कि गुण काव्य शोभा के जन्मदायक धर्मगुण है और उस शोभा को बढ़ाने वाले अलंकार भी हैं | उनके अनुसार गुण विहीन काव्य यौवन विहीन युवती के समान है | यदि गुन न हो तो काव्य में अलंकारों की शोभा भी व्यर्थ हो जाती है | आचार्य भोज ने तो यहां तक कहा है कि अलंकार से युक्त होने पर भी यदि काव्य में गुण नहीं है तो उसकी शोभा व्यर्थ है और वह श्रवण योग्य नहीं है क्योंकि गुण और अलंकार में गुणों का महत्व ही अधिक है |

स्पष्ट है कि काव्य में गुणों का स्थान विशेष महत्वपूर्ण है और गुण हीं काव्य शोभा के मूल विधायक माने गए हैं |

आवश्यक निर्देश - विद्यार्थीगण को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह अन्य पाठों का भी अध्ययन कर पाठ के मूल भाव को समझें । उससे संबंधित प्रश्न उत्तर का अभ्यास करें। विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत पाठ्य सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य ,लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं जिसका अध्ययन विद्यार्थियों के लिए अति आवश्यक है ।

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी विभाग

नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय